International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 04-06-2023, Accepted: 20-06-2023, Published: 06-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 3-4

रामचरितमानस में स्त्री विमर्श

कृष्णा
शोधार्थी, श्याम विश्वविद्यालय, लालसोट (दौसा), राजस्थान, भारत

सारांश
रामचरितमानस का कालखण्ड मध्यकालीन रहा है जब सामंतवाद चरम पर था और समाज में मूल्यों का पतन हो रहा था विशेष रूप से महिलाओं को लेकर अत्याचार बढ़ता जा रहा था। बाल विवाह, सती प्रथा, महिला अशिक्षा, कन्या भ्रूणहत्या आदि कुप्रथाओं का चलन भी बढ़ रहा था। इस समय तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के माध्यम से स्त्रियों के विभिन्न स्वरूपों, उसके सामाजिक आदर्शों और अधिकारों का वर्णन किया। सामंतवादी और धर्मविरोधी लोगों ने उनकी कई चौपाइयों का गलत अर्थ लगाकर उन्हें दलित विरोधी और स्त्री विरोधी दर्शाने का प्रयास किया परंतु रामचरितमानस स्त्री विमर्श का अनूठा उदाहरण है जो कदाचित साहित्य में देखने को नहीं मिलता है। प्रस्तुत पत्र में रामचरितमानस में स्त्री विमर्श का विश्लेषण किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि तुलसीदास जी स्त्रियों के विरोधी नहीं थे, वह तो नारी विमर्श के विभिन्न रूपों को विभिन्न पात्रों के माध्यम से सटीक रूप से प्रस्तुत कर रहे है।

मूल शब्दः स्त्री विमर्श, रामचरितमानस, तुलसीदास

रामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों में नारी विषयक कई संदर्भ आये है वह ना केवल मध्यकालीन वरन् हर काल की नारी के संदर्भ में है। चाहे वह सीता जैसी पत्नी के रूप में हो, पुत्र प्रेम में डूबी कैकयी हो, वासना से भरी शूर्पनखा हो या शक्ति के मद में चूर ताडका और अन्य राक्षसियाँ अथवा अहिल्या, अनुसूया, शबरी ऐसे अनेक नारी पात्रों के माध्यम से तुलसीदास जी ने नारी विमर्श प्रस्तुत किया है।[1]
उन्होनें पतिव्रता नारी के सामाजिक आदर्श स्थापित करते हुए कहा है कि पतिव्रता स्त्रियों का यशोगान वेद भी करते हैं। वे कहते हैं–''जिय बिनु देह नदी बिनु नारी। तैसिय नाथ पुरुष बिनु नारी।

''सूपनखा रावन के बहिनी।
दुष्ट ह्रदय दारून जस अहिनी।।''
''धिग कैकेयी! अमंगलमूला।
भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला।'
''कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी।
भई रघुबंस बेनुबन आगी।''

कैकेयी, मन्थरा और शूर्पणखा आदि के प्रसंग में नारी–निंदा भी की है क्योंकि आदर्शहीन नारी संपूर्ण समाज, राज्य और देश के लिए हानिकारक हो सकती है।

भ्राता पिता पुत्र उरगारी।
पुरुष मनोहर निरखत नारी।।
होइ बिकल सक मनहि न रोकी।
जिमि रविमनि द्रव रविहि विलोकी।

तुलसीदास नारी की मर्यादाऐं स्थापित करते है और उनका मानना है कि यदि स्त्री वासना के वशीभूत हो जाए तो वह समाज के लिए अमंगल ही करती है। तुलसी जिस एक पंक्ति के कारण सर्वाधिक आलोचनाओं का शिकार हुये हैं, वह है–'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।। यह प्रसंग समुद्र और राम के मध्य है और यह वाक्य भी समुद्र द्वारा कहे गए है। इसलिए यह समुद्र उस समय मध्यकालीन समाज में संपूर्ण समाज की स्त्रियों के प्रति जो सोच थी उसे व्यक्त करता है न कि यह विचार तुलसीदास जी के है।[2]
तुलसी नारी में परम्परागत या शास्त्रानुमोदित रूप से आठ अवगुण विद्यमान मानते हैं, ये अवगुण हैं–साहस, झूठ, चंचलता, छल, कपट, भीरूता, अविवेक, अपवित्रता तथा निर्दयता–

'नारि सुभाव सत्य सब कहहीं।
अवगुन आठ सदा उर रहहीं।।
साहस अनृत चपलता माया
भय अविवेक अशौच अदाया।।

तुलसी मानस में नारी–धर्म और गृहस्थ जीवन में नारी–आचरण और उसकी परमावश्यकता का विशद् वर्णन करते हैं। इस संबंध में अत्रि ऋषि पत्नी 'अनुसूया'–'नारि धर्म कछु ब्याज बखानी' के माध्यम से सीता जी को नारी–धर्म समझाती है।[3]
तुलसी ने पुरुष की अपेक्षा स्त्री की सद्चरित्रता, पवित्रता, पति–धर्म पालन पर अत्यधिक बल दिया है क्योंकि उस समय मुस्लिम शासक हिन्दु स्त्रियों को जबरदस्ती अपने 'हरमों' में उठा ले जाते थे या फिर कुछ स्त्रियाँ स्वयं भी इनके प्रभाव में आ जाती थी। इसीलिए 'जिमि स्वतंत्र भये बिगरहिं नारी' की स्थापना कर उन्होंने नारी–धर्म पालन पर और स्त्री–धर्म पालन पर बल दिया। 'नारी–धर्म पति देउ न दूजा' (तो कहते हैं। इसके साथ वह 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं' और 'कहहिं, बिरंचि रची कत नारी' कहकर स्त्री के पक्ष में ही खड़े होते प्रतीत होते हैं।[4]

निष्कर्ष

यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में नारियों के आदर्शों को स्थापित किया है जो उस काल में ही नहीं आज भी प्रासंगिक है। उनकी कई बातों का

अर्थ गलत तरीके से लिया जाता है लेकिन वे साहित्य की दृष्टि से स्त्री विमर्श करने वाले सबसे अधिक सफल साहित्यकार है।

संदर्भ सूची

1. पोद्दार हनुमानदास, गीता प्रेस गोरखपुर, रामचरितमानस।
2. सिंह, योगेन्द्र प्रताप, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1999, गोस्वामी तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस की लोकभारती टीका।
3. मिश्र, बलदेव प्रसाद, मानस में रामकथा, सं.–1952
4. गुप्त, माता प्रसाद, तुलसीदास, सं.–1942